बाइबल टीचर

वर्ष 21 मई 2024 अंक 6

सम्पादकीय

मै एक मसीही क्यों हूँ?

कई बार लोगों से जब पूछा जाता है कि आप एक मसीही क्यों हैं तो अक्सर भिन्न-भिन्न उत्तर सुनने को मिलते हैं। कई लोग कहते हैं कि यीशु में विश्वास करके हमारी बहुत सारी समस्याएं दूर हो गई हैं। कई कहते हैं कि हमें मसीही धर्म अच्छा लगता है। बहुत से कारण बताये जा सकते हैं कि आप एक मसीही क्यों हैं। बहुत से लोग कहते हैं कि हमने यीशु के बारे में बहुत कुछ सुना है। हमने टीवी पर और रेडियो पर सुना है इसलिये हमारा विश्वास उसमें है और हमने उसे अपने जीवन में अपना लिया है। परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं एक मसीही क्यों हूं?

मैं एक मसीही इसलिये हूं क्योंकि मै यह विश्वास करता हूं कि परमेश्वर मेरा बनानेवाला है। मैं जीवते परमेश्वर में विश्वास करता हूं जिसकी कोई सूरत और मूरत नहीं है। प्रेरित पौलूस अथेने में लोगों से कहता है ''जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाये हुये मन्दिरों में नहीं रहता। न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है क्योंकि वह तो आप ही सबको जीवन और श्वास और सब कुछ देता है। उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं, और उनके ठहराये समय और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है कि वे परमेश्वर को ढूढें, कदाचित उसे टटोलकर पा जाये तौभी वह हममें से किसी से दूर नहीं'' (प्रेरितों 17:24-27)। परमेश्वर ने इस सृष्टि की रचना की उसने जमीन और आसमान को बनाया (उत्पति 1:1)। उसने मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाया और मेरे अन्दर आत्मा है जिसे परमेश्वर ने मुझे दिया है और मैं एक जीवता प्राणी हूं।

हम में से अधिकतर लोगों में एक आत्मिक इच्छा है अर्थात हम परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं। (भजन 42:1)। शायद कई लोग परमेश्वर में विश्वास न करें

परन्तु उसमें विश्वास करने का उनके पास कोई बहाना नहीं है। (रोमियों 1:19-21)। मैं एक मसीही हूं क्योंकि मैं एक जीवते परमेश्वर में विश्वास करता हूं जिसने मुझे बनाया है।

मैं मसीही इसलिये भी हूं क्योंकि मैं यह विश्वास करता हूं कि परमेश्वर ने अपना वचन हमें दिया है, जो हमारी अगुवाई करता है। बाइबल हमें यह सच्चाई बताती है कि आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की थी (निर्गमन 20:11; भजन 33:6)। बाइबल में 66 पुस्तके हैं और लगभग 40 लोगों ने परमेश्वर की प्रेरणा से इसे लिखा था। यह पुस्तक हमें बताती है कि इस पृथ्वी पर हमारे रहने का क्या उद्देश्य है। यह पुस्तक हमें यह भी बताती है कि पृथ्वी पर अपनी जीवन यात्रा समाप्त होने के बाद हम कहां जाएगें। बाइबल हमें यह भी बताती है कि हम अनन्तकाल में कहां रहेंगे। यदि हम प्रभु की आज्ञाओं को मानकर विश्वास योग्य बने रहेंगे तो हम स्वर्ग में रहने के योग्य हो सकते हैं। यह बात सच्ची और हर तरह से मानने योग्य है। यह वचन सच्चा है और बताता है कि पवित्र लोगों ने पवित्र आत्मा से उभारे जाकर इसे लिखा (2 पतरस 1:21)। इसलिये मैं एक मसीही इसलिये भी हूं क्योंकि मैं परमेश्वर के वचन में दृण विश्वास करता हूं।

मैं एक मसीही हूं क्योंकि मेरा यीशु पर दृण विश्वास है, मेरा यह विश्वास है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। उसके जन्म के विषय में कहा गया था कि दाऊद राजा के शहर में एक बच्चे का जन्म हुआ है जो जगत का उद्धारकर्ता है। (लुका 2:11)। रोमी सिपाहियों ने इस बात को मान लिया था कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (मती 27:54)। उसके चेले भी इस बात को मन से मानते थे कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (मती 16:16)। मेरा प्रभु यीशु में पूर्ण विश्वास है क्योंकि उसने कहा था कि ''मार्ग सच्चाई और जीवन में ही है'' (यहून्ना 14:6)। और बिना उसके द्वारा कोई पिता के पास यानि परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। मैं मानता हूं जैसे पतरस ने कहा था कि परमेश्वर ने उसे प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। (प्रेरितों 2:36)। यीशु मसीही ही उद्धारकर्ता है तथा स्वर्ग में जाने का एक मार्ग है। हमारा विश्वास उस परमेश्वर पर है जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया। (1 पतरस 1:21)।

प्रभु यीशु में मेरा पूर्ण विश्वास है और इसलिये मैं एक मसीही हूं। यीशु ने बिमारों को चंगा किया (मरकुस 1:32-34)। एक बड़े तुफान को उसने रोक दिया। (मती 8:23-27)। और यहां तक कि मृतकों को भी जीवित कर दिया (लूका 7:11-15)। यूहन्ना 11 में हम पढ़ते हैं कि उसने लाजरस को ज़िन्दा कर दिया। यह सब उसने इसलिये किया ताकि लोग उसमें विश्वास करें कि सचमुच में वह परमेश्वर का पुत्र है। (युहन्ना 20:31)।

आज यदि आप अपने पापों से मूक्ति पाना चाहते हैं तो उसमें विश्वास करके बपतिस्मा लीजिये (मरकुस 16:16)।

मार्ग मैं हूँ

(यूहन्ना 14:6)

सनी डेविड

इस लेख के द्वारा हम अपने ध्यानों को परमेश्वर के वचन की ओर लगाऐंगे। आज मैं आपको विशेष रूप से यह बताने जा रहा हूं, कि अपने विषय में अनेक अन्य बातों के साथ-साथ प्रभु यीशु ने स्वयं को एक जगह ''मार्ग'' कहकर सम्बोधित किया था। मार्ग एक ऐसी वस्तु है जिसकी आवश्यकता हम में से हर एक को है। मार्ग हमें एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाता है। अपने आने-जाने की सुविधा के लिये हमने अपने गांवों, बस्तियों तथा नगरों में अनेक मार्ग बना लिये हैं। वास्तव में, मार्गों के न होने से आज हमें बहुतेरी असुविधाओं का सामना करना पड़ता। हमारे पूर्वजों को कुछ ही मील दूर बसे किसी स्थान तक जाने के लिये कई घन्टे वा दिनों का सफर करना पड़ता था। किन्तु आज मार्गों की सुविधा के कारण उसी यात्रा को हम बिल्कुल थोड़े से ही समय में पूरा कर लेते हैं। परन्तु प्रभु यीशु ने अपनी तुलना मार्ग से क्यों की? क्यों उसने स्वयं को मार्ग कहकर सम्बोधित किया? आईए, हम इस बारे में देखें।

लिखा हैं, यीशु ने कहा, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)। सो हम देखते हैं, कि यीशु यहां उस मार्ग के विषय में कह रहा है, जो मनुष्य को पिता, अर्थात् परमेश्वर के पास पहुंचाता है। उसने कहा, कि वह मार्ग मैं हूं, और बिना मेरे द्वारा कोई मनुष्य पिता अर्थात् परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। यीशु के ये शब्द हम में से हर एक के लिये वास्तव में बड़े ही महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि हम में से प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंचना चाहता है, और यदि केवल यीशु ही परमेश्वर तक पहुंचने के लिये एक मात्र मार्ग है, तो हमारे लिये यह जानना बड़ा ही आवश्यक है कि हम किस प्रकार यीशु के द्वारा परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं, और हमें यीशु का अनुसरण कैसे करना चाहिए।

इस सम्बन्ध में एक बड़ी ही मुख्य तथा महत्वपूर्ण बात जो हमें मिलती हैं वह यह है, कि पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि मसीह यीशु परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में एक ही बिचवई है। (1 तीमुथियुस 2:5)। और एक बिचवई वह होता है जो दो पक्षों में मेल करवाता है। कभी-कभी हमें कोई नाला या नदी पार करना होता है, और कोई साधन न पाकर हम बड़े ही असमंजस में पड़ जाते हैं। किन्तु तभी एकाएक हमें एक पुल नजर आता है, और उसे देखकर हम प्रसन्न हो जाते हैं। क्योंकि हमें पार जाने का एक मार्ग, एक साधन मिल जाता हैं। बाइबल के लेखक का ठीक यही अभिप्राय है जबकि वह कहता है, कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में मसीह यीशु एक बिचवई है।

यद्यपि मनुष्य परमेश्वर के पास पहुंचने के लिये उसकी उपासना करता है, उसे चढ़ावे चढ़ाता है, और दान-पुन्य के काम करता है। परन्तु आप क्या सोचते है? क्या

परमेश्वर हर तरह की वस्तुएं स्वीकार कर लेता है? क्या वह धर्म तथा अधर्म में कोई भेद नहीं देखता? क्या वह धर्मी तथा पवित्र परमेश्वर नहीं है? क्या हम उसके पास अपने एक हाथ में अधर्म तथा दूसरे में धर्म लेकर आ सकते हैं? पूर्व-काल में परमेश्वर ने इस्त्राएल नाम एक जाति को अपने लिए चुना था। उसने उसे अपनी आज्ञाएं तथा व्यवस्था दी थी। परन्तु वे उस से फिर गए। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक के पहिले अध्याय में हम देखते हैं, कि तब परमेश्वर उन से यों कहता है: 'बैल तो अपने मालिक को और गदहा अपने स्वामी की चरनी को पहिचानता है परन्तु इस्त्राएल मुझे नहीं जानता मेरी प्रजा विचार नहीं करती। हाय, यह जाति पाप से कैसी भरी है! यह समाज अधर्म से कैसा लदा हुआ है! इस वंश के लोग कैसे कुकर्मी हैं ये लड़केबाले कैसे बिगड़े हुए हैं? उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया, उन्होंने इस्त्राएल के पवित्र को तुच्छ जाना है। वे पराए बनकर दूर हो गए हैं।''

''तुम जब अपने मुंह दिखाने के लिये आते हो, तब कौन चाहता है कि तुम मेरे आंगनों को पांव से रौंदो? व्यर्थ अन्नबलि फिर मत लाओ, धूप से मुझे घृणा हैं। नए चांद और विश्राम दिन का मानना और सभाओं का प्रचार करना यह मुझे बुरा लगता है। महा सभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझ से सहा नहीं जाता। तुम्हारे नए चांदों और नियत पर्वों के मानने से मैं जी से बैर रखता हूं, वे सब मुझे बोझ जान पड़ते हैं, मैं उनको सहते-सहते उकता गया हूं। जब तुम मेरी ओर हाथ फैलाओ, तब मैं तुम से मुख फेर लूंगा, तुम कितनी ही प्रार्थना क्यों न करो, तौभी मैं तुम्हारी न सुनूंगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से भरे है। अपने को धोकर पवित्र करो, मेरी आंखों के सामने से अपने बुरे कामों को दूर करो भविष्य में बुराई करना छोड़ दो'' और फिर परमेश्वर उन्हें यू कहकर सम्मति देता है कि, ''आओं, हम आपस में वाद-विवाद करें। तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाई उजले हो जाएंगे, और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।'' किन्तु, ''यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो।''

सो हम देखते हैं, कि हम अपने जीवन में पाप के रहते हुए उसके सम्मुख कुछ भी लेकर नहीं आ सकते। यदि हमारे जीवन में पाप हैं, तो परमेश्वर के प्रति हमारी उपासना, हमारे काम, और हमारे बलिदान सब कुछ व्यर्थ है। हमें उन से कुछ भी प्राप्त न होगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे जीवन में पाप है, पहिले अपने को धोकर पवित्र करो! परन्तु किसके जीवन में पाप है? क्या पृथ्वी पर कोई भी ऐसा मनुष्य है जो पाप रहित है, जिसने कभी कोई पाप न किया हो? परमेश्वर का वचन कहता है, कि सब मनुष्यों ने पाप किया है और सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों 3:23)।

इसलिये हम देखते हैं कि हम सबको एक ऐसे मार्ग की आवश्यकता है जिसके द्वारा हम अपने को धोकर, अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके परमेश्वर के पास आने के योग्य बन जाएं। किन्तु, यीशु ने कहा, कि, ''मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' परन्तु, कदाचित आप जानना चाहें, कि हम किस प्रकार मान लें कि यीशु ही वास्तव में वह मार्ग है? मित्रो, इस बात का उत्तर स्वयं यीशु का ही वह बलिदान है जो उसने हम सब के पापों के कारण क्रूस पर किया।

वह परमेश्वर का पुत्र था। इस बात की पुष्टि उसके अद्‌भुत जन्म, उसके पाप-रहित जीवन, उसके महान कार्यों और मृत्यु पश्चात् उसके पुनरूत्थान से होती है। परमेश्वर ने उसे हमारे पापों का प्रायश्चित बनाकर जगत में भेजा। उसी की इच्छा से वह क्रूस के ऊपर चढ़कर हमारे लिये बलिदान हुआ। पवित्रशास्त्र कहता है: "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। सो जबकि हम अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?" (रोमियों 5:6-10)।

अब यहां हम जिन विशेष बातों को देखते हैं, वे इस प्रकार हैं:

सबसे पहिले तो हम देखते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र, धर्मी यीशु जगत के अधर्मी मनुष्यों के लिये मारा गया, अर्थात् वह हमारे पापों का प्रायश्चित बना। दूसरे, हम यीशु मसीह के क्रूस पर बहाए लोहू के कारण धर्मी ठहरते हैं, अर्थात् यीशु के बहाए लोहू के कारण परमेश्वर अब हमें एक पापी की तरह नहीं परन्तु एक धर्मी की नाई देखता है। तीसरे, क्योंकि यीशु के लोहू के कारण हम धर्मी ठहरते हैं, इसलिये अब हम परमेश्वर के क्रोध से भी बचेंगे। क्योंकि परमेश्वर का क्रोध हमारे ऊपर केवल तभी तक था जब तक कि हम पाप में थे, कितु अब जबकि यीशु ने हमारे छुटकारे का दाम भर दिया है तो अब हम पाप से मुक्त हो गए हैं। फिर, चौथे स्थान पर हम यह देखते हैं, कि यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेल हुआ है। हम पाप वा अधर्म के कारण परमेश्वर से दूर वा अलग थे। परन्तु क्योंकि यीशु ने हमारे अपराधों को अपने ऊपर ले लिया, और क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे अपराधों का उचित दण्ड प्राप्त किया, इस कारण पाप, अर्थात् वह वस्तु जो हमें हमारे परमेश्वर से दूर वा अलग किए हुए थी अब बीच में न रही। इसलिये, हम देखते हैं, कि यीशु हमारा मेल है। वह हमारा बिचवई है, और जबकि उसकी मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ है, तो अब जब कि वह जीवता है, हम अवश्य ही उसके जीवन के कारण उद्धार पाएंगे।

सो मित्रों, इस प्रकार हम देखते हैं, परमेश्वर तक पहुंचने का एक मार्ग हैं। क्या आप उस पर विश्वास करते हैं? पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि यदि मनुष्य यीशु मसीह में विश्वास करे, और अपने सब पापों से मन फिराए, और अपने पापों की क्षमा के लिये मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले, तो वह मसीह में होकर उद्धार पाएगा। मित्रो, किसी निश्चित स्थान पर पहुंचने के लिये उचित मार्ग आवश्यक है, परन्तु यदि हम उस मार्ग को न अपनाएं तो उस निश्चित स्थान पर पहुंचना असम्भव है। परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। वह चाहता है कि आप उसके पास आएं। उसने एक मार्ग दिया है। क्या आप उस पर चलने को तैयार हैं?

वर्तमान कलीसिया

जे. सी. चोट

प्रभु की कलीसिया की स्थापना लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुई थी (प्रेरितों 2) परन्तु यह आज भी उसी प्रकार से वर्तमान है जिस प्रकार से उस समय थी। "किन्तु यह कैसे संभव हो सकता है" कदाचित आप पूछें। नए नियम में कलीसिया के आदर्श का अनुकरण करने से।

कुछ लोगों का ऐसा विचार है कि यह सिद्ध करने के लिये कि आज की कलीसिया वही कलीसिया है जिसे प्रभु ने स्थापित किया था हमें पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर अब तक विस्तार पूर्वक इसके विषय में विचार करना चाहिए। किन्तु इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। सबसे पहले हम यह जानते हैं कि प्रभु ने कहा कि उसके राज्य अर्थात् उसकी कलीसिया का कभी भी अंत नहीं होगा और वह सदा तक स्थिर रहेगी। (दानिय्येल 2:44; लूका 1:33; इब्रानियों 12:28)। इसका अभिप्राय यह हुआ कि आरंभ से लेकर अब तक कहीं न कहीं कलीसिया अवश्य ही विद्यमान रही है। इसको हर एक स्थान पर हर समय रहने की आवश्यकता नहीं थी। दूसरी ओर, राज्य का बीज (लूका 8:11)। हमारे पास नए नियम के वचनों में सुरक्षित है। जबकि इसने प्रेरितों के दिनों में मसीही उत्पन्न किए थे, यह आज भी मसीही ही उत्पन्न करेगा। और जबकि ये जो प्रेरितों के दिनों में मसीही बनें सब मिलकर एक कलीसिया थे तब आज भी वैसा ही है। इसलिये, जहां कहीं भी नया नियम है वहां प्रभु की कलीसिया का होना संभव है, यदि वे लोग जिनके पास यह है इसका अनुकरण करें।

परमेश्वर ने अपने लोगों को अनुसरण करने के लिये सदा एक आदर्श दिया है। उसने नूह को एक आदर्श दिया ताकि जहाज़ बनाने के लिये वह उसका अनुसरण करे। (उत्पत्ति 6)। उसने मंदिर बनाने के लिये मूसा को एक आदर्श दिया, व इसके साथ ही यह चेतावनी भी दी, "कि देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना। (इब्रानियों 8:5)। और इसी प्रकार से प्रभु की कलीसिया का संपूर्ण आदर्श हमें नए नियम में दिया गया है। जिस प्रकार से नूह और मूसा को परमेश्वर द्वारा दिए गए आदर्शों का अनुसरण करना आवश्यक था, उसी प्रकार से कलीसिया के आदर्श का हमें भी अनुसरण करना चाहिए। और जिस प्रकार से नूह और मूसा ने परमेश्वर के आदर्श का अनुसरण जहाज व मन्दिर बनाने में किया, व परिणाम स्वरूप परमेश्वर प्रसन्न हुआ, इसलिये जब हम कलीसिया के आदर्श का अनुसरण करेंगे, परमेश्वर ऐसा करने से प्रसन्न होगा क्योंकि तब कलीसिया उसी की इच्छानुसार वर्तमान होगी, यानि बिना उसकी इच्छा में कुछ भी जोड़े या घटाए। (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)।

कलीसिया की पहचान के सभी चिन्ह बहुत ही स्पष्टता से नए नियम में दर्शाए गए हैं। प्रभु ने अपने वचन के द्वारा प्रकट किया है कि कलीसिया क्या है, इसको किसने बनाया, इसकी स्थापना कब हुई, इसका क्या नाम है, इसके सदस्यों का नाम क्या है,

इसके सदस्य किस प्रकार से बनते हैं, इसकी उपासना और इसका कार्य क्या है? इसके अतिरिक्त यह भी बताया गया है कि इसका सिर (प्रधान) कौन है, यह किस मूल्य से मोल ली गई है, इसका उद्धारकर्ता कौन है, इत्यादि। कलीसिया के विषय में प्रभु ने हमें किसी प्रकार से भी संदेह में नहीं रखा है, परन्तु स्पष्टता से बताया है कि यह क्या है, व इसका उद्देश्य तथा कार्य क्या है। यह आदर्श उतना ही स्पष्ट है जितना कि परमेश्वर का वचन है।

इसलिये बाइबल की एक व सच्ची कलीसिया को जानने व समझने के लिये हमें केवल इतना ही करना है कि हम बाइबल का अध्ययन करें। इसके विषय में सच्चाई को जान लेने के बाद यदि हम उसका अनुसरण करेंगे, तो हम इसके सदस्य बन जाएंगे और इसी रीति से वही कलीसिया जिसे मूल में मसीह ने स्थापित किया था। बीज अपने स्वभाव के अनुसार ही उत्पन्न करता है, और परमेश्वर का वचन भी मसीही व मसीह की कलीसिया के सदस्य ही उत्पन्न करेगा, ठीक उसी प्रकार से जैसे इसने पहले किया।

मसीह की कलीसिया समस्त संसार में वर्तमान है। कलीसिया किसी भी समय और कहीं भी वर्तमान हो सकती है, परन्तु ऐसा केवल तभी हो सकता है यदि मनुष्य बाइबल की शिक्षा का अनुसरण करे। संसार के किसी भी भाग में जहां लोग परमेश्वर की इच्छानुसार चलना छोड़ देंगे वहां पर यह समाप्त हो जाएगी।

आज मसीह की कलीसिया उन्नति कर रही है वह बढ़ रही है क्योंकि यह केवल बाइबल का अनुकरण करती है। यह विभाजन तथा फूट का विरोध करती है व मसीह की प्रशंसा करती है। यही एक कलीसिया है जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ सकते है। यह एक सम्प्रदाय अथवा किसी प्रकार का कोई अन्य समुदाय नहीं है। यह प्रोटेस्टैन्ट, कैथलिक, या साम्प्रदायिक नहीं है। तब यह क्या है? केवल प्रभु की कलीसिया। व इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

पृथ्वी पर प्रभु की कलीसिया का कोई प्रधान (सिर) अथवा प्रधान कार्यालय नहीं है। हम किसी मनुष्य की बढ़ाई नहीं करते। किसी भी व्यवस्था या संगठन को जो मनुष्य की बुद्धि की उपज है हम स्वीकार नहीं करते। प्रत्येक मंडली स्वाधीन है और उसका संगठन स्थानीय है व हर एक मंडली के अपने अध्यक्ष और सेवक, प्रचारक, शिक्षक, और सदस्य है। एक सदस्य दूसरे सदस्यों से बढ़कर नहीं है क्योंकि प्रभु की कलीसिया में क्लेर्जी तथा लेइटी जैसी कोई वस्तु नहीं पाई जाती।

सदा से ही मसीह की कलीसिया के बहुतेरे शत्रु रहे हैं और आज भी हैं। मनुष्यों के धर्म संगठन इसका विरोध करते है क्योंकि यह उनकी शिक्षाओं का अनुकरण नहीं करती। वे हम से ईर्ष्या करते है क्योंकि हम उनके साथ किसी प्रकार की सहभागिता नहीं करते। वे खूब जानते है कि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो केवल बाइबल का ही अनुकरण करने में प्रयत्नशील हैं, और जबकि वे स्वयं मनुष्यों की शिक्षाओं पर चलते है। उनको यह भी ज्ञात है कि हम मसीह का अनुसरण करते है और उसके नाम को अपने ऊपर रखते हैं, जबकि वे मनुष्यों का अनुसरण करते व मनुष्यों के नामों को अपने ऊपर रखते हैं। हमारे विरूद्ध उनके हथियार सत्य नहीं है, परन्तु उनके मनों का पूर्वद्वेष और हमारे विषय में असत्य

कथन देना इत्यादि है। किन्तु उनका परिश्रम व्यर्थ है।

प्रभु की कलीसिया सदा से ही विजयी रही है। संसार में से सब शत्रु तथा नरक के सब शैतान इस पर प्रबल नहीं हो सकते। यह गिनती में उनसे भले ही छोटी हो जो इसके चारों ओर पाई जाती है, परन्तु जिनका उद्धार होगा वे थोड़े ही हैं। (मत्ती 7:13, 14)। यीशु मसीह की केवल एक ही कलीसिया है और वह एक दिन अपनी उस एक कलीसिया के लिये वापस आएगा। (इफिसियों 5:27; यूहन्ना 14:1-6)। वह अपने राज्य का राजा है और वह इसके लिये आएगा और इसे परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। (1 कुरिन्थियों 15:24)। उसकी केवल एक ही दुल्हिन है (प्रकाशितवाक्य 21:9), और अपनी उस दुल्हिन को लेने के लिये, जो उसका नाम अपने उुपर रखती है, एक दिन वह आ रहा है। परन्तु अन्य का क्या होगा? वह उनसे खुलकर कह देगा कि वह उनको नहीं जानता। वह उनको उखाड़ देगा। (मत्ती 15:13)। और उन्हें इकट्ठा करके आग में फेंक दिया जाएगा।

आज हमारा निवेदन सच्ची नए नियम की मसीहीयत के लिये है। हमारा आपसे यह आग्रह है कि आप परमेश्वर के वचन की ओर फिरें और केवल उसी को अपना पथदर्शक स्वीकार करें। बाइबल को पढ़कर सच्चाई को जानें। जो यह शिक्षा देती है वही करें, तब आप उद्धार पाएंगे और प्रभु आपको अपनी कलीसिया में मिलाएगा, जिसके विषय में आप बाइबल में पढ़ते है।

यदि आप मसीह की कलीसिया के सदस्य नहीं है तब हम आपको प्रोत्साहित करना चाहते हैं कि आप इसके सदस्य बनें। परमेश्वर पर विश्वास कीजिए, अपने पापों से मन फिराइए, प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार कीजिए, और बपतिस्मा लीजिए ताकि आप को उद्धार मिले। (मरकुस 16:16; रोमियों 10:9, 10; प्रेरितों 2:38)। तब प्रभु अपनी कलीसिया में आपको मिलाएगा व आप एक मसीही बन जाएंगे। (प्रेरितों 2, 47; प्रेरितों 11:26)। क्या आप ऐसा करेंगे? यह सब करने के लिये कोई आपको विवश या बाध्य नहीं कर रहा है, परन्तु हमारा विश्वास है कि यदि आप अपनी बाइबल का अध्ययन करेंगे तो आप यथार्थ में मसीही बनना चाहेंगे और इसी रीति से अपने आगे का जीवन प्रभु के लिये व्यतीत करना चाहेंगे, व उसके राज्य और सुसमाचार को फैलाने का प्रयत्न करेंगे।

क्या स्त्री के लिए आराधना में सिर ढकना अनिवार्य है?

बैटी बर्टन चोट

ऐसे लोग हैं जिनका कहना है कि मण्डली में स्त्री के लिए सकार्फ या पल्लू से सिर ढकना अनिवार्य है। ऐसे लोग तब कुछ नहीं बोलते, जब वे स्कूल में पढ़ा रही होती हैं, गली या बाजार में किसी से मिलने पर वचन की बात कर रही होती हैं या जब बर्तन मांजते हुए मन

ही मन प्रार्थना कर रही होती हैं।

अन्य संस्कृतियों में, और लोग हैं जिनका कहना होता है कि स्त्री को हर समय सिर ढक कर रखना चाहिए। कई लोगों का कहना होता है कि सिर के साथ-साथ चेहरा और पूरा तन भी ढका होना अनिवार्य है। परन्तु कुछ लोग हैं जिनका कहना है कि सिर ढकना आवश्यक नहीं है। इस उलझन का कारण क्या है? 1 कुरिन्थियों 11:2-16 में सिर होने, परम्पराओं और ओढ़नी की चर्चा की नासमझी का होना है।

> ***विचार करने वाली बात:*** *क्या आपके समाज में स्त्री के लिए अपने पति की अधीनता या आदर के प्रतीक घूंघट या दुपट्टे से सिर ढकना अनिवार्य है? क्या आप इस प्रथा को मानते हैं? क्या आपने पवित्र शास्त्र के इस वचन का अध्ययन किया है? यदि किया है, तो क्या आप मानते हैं कि सिर पर पल्लू लेना अनिवार्य है?*

इस पाठ के आरम्भ में यह ध्यान दिलाया जाना चाहिए कि 1 कुरिन्थियों 11 अध्याय में वचन कहीं पर भी यह संकेत नहीं देता कि स्त्री की पोशाक या पहरावे से सम्बन्धित वचन सार्वजनिक आराधना के समय तक ही सीमित हो।

पहली सदी के दौरान चुनिंदा लोगों को "*प्रेरितों के हाथ रखने*" के द्वारा पवित्र आत्मा दिया जाने की जो प्रतिज्ञा की गई थी उस में स्त्रियां भी थीं: *"... मैं अपना आत्मा सब पर उण्डेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यवाणी करेंगी"* (प्रेरितों 2:17ख)।

प्रेरितों 21:9 में हम पढ़ते हैं कि फिलिप्पुस की चार कुंवारी बेटियां थीं, जो भविष्यावाणी करती थीं। इसके बावजूद, जैसा कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से पौलुस के द्वारा कहा गया, स्त्रियों को कलीसिया की मिली-जुली सभा में जहां पुरूष और स्त्रियां सब हों, सार्वजनिक रूप में बोलने की मनाही थी। प्रेरित कहता है, *"स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है"* (1 कुरिन्थियों 14:34)। इस कारण फिलिप्पुस की बेटियों का भविष्यवाणी करना केवल स्त्रियों के बीच, अकेले में, घरों में और निजी लोगों के साथ होता होगा।

इन वचनों के आधार पर जो कलीसिया में स्त्रियों की पूरी भूमिका पर प्रकाश डालते हैं, हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि 1 कुरिन्थियों 11 में यहां स्त्री के खामोशी से या बोलकर, प्रार्थना करने की सामान्य स्थितियों में जहां केवल स्त्रियां हों, स्त्रियों के पहरावे और सिर ढकने और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी करने, व्यक्तिगत और निजी चर्चाओं में उपदेश देने की बात है।

ऐसा लगता है कि काफिर महिला कर्मियों से मसीही स्त्रियों के बीच में से आत्मिक कर्मी में अन्तर करने के लिए एक रेखा खींची जा रही थी। मन्दिर की वेश्याएं जहां स्थानीय प्रथाओं की अनदेखी करते हुए अपने पेशे को दिखाने के लिए नंगे सिर घूमतीं और अपने बाल भी मुंडवा लेती थीं, वहीं मसीही स्त्रियों के लिए भक्तिपूर्ण और अधीनता को दिखाते हुए, विशेषकर प्रार्थना करने या भविष्यवाणी करने के आत्मिक कार्य में लगे होने पर, ऐसा पहरावा पहनना आवश्यक था जिसे बाहर के कुछ लोग केवल पुरूषों द्वारा किया जाने वाला काम ही मानते होंगे।

सामान्य प्रथा के अनुसार सिर ढक कर मसीही स्त्री स्वयं को काफिर स्त्रियों से पृथक करती और इस बात की पुष्टि भी करती थी कि आत्मिक कार्य करने में भी वह कलीसिया के पुरूषों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर रही, बल्कि अपने पति के अधीन है।

आम सोच के विपरीत ये आयतें स्त्री के समस्त कलीसिया की सभा में भाग लेने के समय

स्त्री के पहरावे की बात करती हुई नहीं लगतीं। वास्तव में, अकेले में, दैनिक जीवन में उसकी पोशाक चाहे वैसी ही हो सकती है, जैसी मण्डली में, परन्तु इन आयतों में सार्वजनिक सभाओं की बात नहीं हैं। 12-16 आयतों में *''इकट्ठे होने''* (11:17), ''जब कलीसिया में इकट्ठे होते हो'' (11:18), *''तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो''* (11:20), *''कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो''* (14:23), *''तुम इकट्ठे होते हो''* (14:26) की कोई बात नहीं है।

आइए अब इन वचनों पर विचार करते हैं।

> ***1 कुरिन्थियों 11:2:*** *''हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूं कि जो-जो परम्पराएं मैंने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पालन करते हो।''*

आरम्भ में ही पौलुस ने उस विषय को, नियम नहीं बल्कि ''परम्परा'' कहकर, जिस पर वह चर्चा करने वाला था, उस प्रश्न का, जो उन्होंने उससे पूछा था, परिचय दे दिया।

> ***1 कुरिन्थियों 11:3:*** *''परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरूष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरूष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।''*

''परम्परा'' के विपरीत उसने कहा कि ''परन्तु'' और फिर अधिकार के जिस नियम पर विचार किया जाना आवश्यक था, उसे रेखांकित करते हुए उसकी परिभाषा दे दी। ठहराए हुए अधिकार से सम्बन्धित परमेश्वर के नियम के प्रति अधीनता को [परम्परा रूप में] दिखाती होने के कारण ओढ़नी की चर्चा बाद की बात है।

इस वचन में और जो भी शिक्षा हो, हमें परमेश्वर के ठहराए अधिकार के क्रम की वास्तविकता को कभी नहीं भुलाना चाहिए। इस पर बहस करके कि चर्चा अधीन ओढ़नी कैसी हो या अधिकार का प्रतीक क्या हो, हम ईमानदारी से और नेकनीयती से गलत निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं, जिसके लिए निश्चय ही परमेश्वर हमें क्षमा कर देगा। परन्तु हम इस स्पष्ट शिक्षा को नहीं भूल सकते कि हर पुरूष का सिर मसीह है, स्त्री का सिर पुरूष है और मसीह का सिर परमेश्वर है। इस सच्चाई की उपेक्षा करना या इसे चुनौती देना परमेश्वर के सिस्टम पर ही हमला है।

> **1 कुरिन्थियों 11:4-6:** *''जो पुरूष सिर ढके हुए प्रार्थना या भविष्याणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है, परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है। यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा ले; यदि स्त्री के लिए बाल कटाना या मुण्डाना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढे।''*

अधिकार के परमेश्वर के क्रम (परमेश्वर, मसीह, पुरूष, स्त्री) को साफ-साफ बताने के बाद पौलुस यह ध्यान दिलाने लगा कि प्रार्थना करने या भविष्यवाणी करने के समय सिर ढकना या न ढकना, अपने सिर का आदर या अनादर करने के समान था। यदि पुरूष सिर ढक कर प्रार्थना करे तो उसने अपने सिर का अपमान किया (उसके अपने सिर का या मसीह का, जिसका पुरूष के ऊपर अधिकार है, यह स्पष्ट नहीं है; यह मान लेना काफी है कि मसीही पुरूष ऐसा अपमान नहीं करना था।)

दूसरी ओर बिना सिर ढके प्रार्थना करने वाली स्त्री अपने सिर का अपमान करती है। पुनः, अपने सिर का हो या अपने पति का अपमान, परमेश्वर नहीं चाहता था कि उन दोनों में से कोई भी अपमान करने के दोषी हो।

परन्तु यह देखने के लिए पौलुस यहां पर कुरिन्थुस के मसीही लोगों के साथ जिस परिस्थिति की चर्चा कर रहा है उसमें एक शर्त है कि ''*क्या स्त्री के लिए बाल कटाना या मुण्डन कराना लज्जा की बात*'' है, हमें आगे पढ़ना आवश्यक है। जब तक शलीनता के परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन न हो, संस्कृति या परम्परा से तय होता कि पहरावे में किस बात को लज्जा की बात माना जाए और किसे स्वीकारा जाए।

विचार करने वाली बात: *इस आयत में, इसके आधार पर कि ''क्या यह लज्जा की बात है,'' परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा पौलुस ने ओढ़नी के सम्बन्ध में नियम बना दिए। यदि किसी देश में लम्बे बाल रखने या घूंघट या पर्दे के न होने को लज्जा की बात नहीं माना जाता, तो क्या ये नियम वहां लागू होंगे?*

आरम्भ में जब आदम और हव्वा ने पाप किया था, और उन्हें पता चल गया था कि वे नंगे हैं, तो पवित्र शास्त्र कहता है कि परमेश्वर ने हव्वा के ऊपर आदम को सिर बनने की घोषणा की और उसने उनके नंगेपन को ढकने के लिए अंगरखे बनाए (उत्पत्ति 3:16, 21)।

इस घटना से हमें दो महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है कि घर में अधिकार का क्रम (जहां पुरूष सिर है, व स्त्री उसकी अधीनता में है) आरम्भ ही से बना नियम है, न कि किसी विशेष इलाके की प्रथा या परम्परा और (2) परमेश्वर ने कपड़े से हमारे शरीरों को ढकने की बात ठहरा दी ताकि हमारा नंगापन छिप जाए। हव्वा के सिर ढकने के विषय में कुछ नहीं कहा गया। ऐसे कहां जा सकता है कि आरम्भ में परमेश्वर की ओर से घूंघट को नियम नहीं बनाया गया था।

परन्तु इस अध्ययन से सम्बन्धित, यह ध्यान देना आवश्यक है कि किसी की जीवनशैली, मान्यता, नैतिकता और धार्मिक विश्वासों को दिखाने के लिए पवित्र शास्त्र के साथ-साथ लगभग हर संस्कृति के साथ जोड़ दिया गया कि बाल किस प्रकार ढके जाते थे या घूंघट और अन्य प्रकार की ओढ़नियां कैसी होती थीं।

पुराने नियम और नये नियम की यहूदी पृष्ठभूमि में, सिर ''उघाड़ने'' का अर्थ था मुंडन कराना। लैव्यव्यवस्था 10:1 में जब नादाब और अबीहू अपने पाप के कारण मर गए थे तो परमेश्वर ने हारून को परम्परा के अनुसार शोक में अपना सिर ''मुंडवाने'' से मना किया। अय्यूब 1:20 बताता है कि जब अय्यूब को समाचार मिला कि उसके बच्चे एक भयानक तूफान में मारे गए हैं तो उसने अपने वस्त्र फाड़े और अपना सिर मुंडवा दिया।

मूसा की व्यवस्था के अधीन याजक ''शान और सुन्दरता के लिए'' पगड़ियां (निर्गमन 28:40; 39:28) या टोपियां पहनते थे। पगड़ी पहनने के अलावा महायाजक ''पवित्र मुकुट'' पहनता था (29:6)। यहूदी पुरूष आज भी आराधना के समय अपने सिरों पर कुछ न कुछ पहनकर उन्हें ढकते हैं।

दूसरी ओर, कोढ़ी व्यक्ति के लिए अपना ऊपरी होंठ ढांपे हुए अपने सिर के बाल बिखेरना अनिवार्य होता था (लैव्यव्यवस्था 13:43)।

गिनती 6 अध्याय के अनुसार मन्नत मानने वाला व्यक्ति जब तक उस मन्नत के अधीन रहता था तब तक वह अपने बाल नहीं कटवा सकता था। शिमशोन नाजीर ही था।

रिबका ने अपने विवाह से पहले जब इसहाक को उससे भेंट करने के लिए खेत के दूसरी ओर आते देखा, तो उत्पत्ति 24:65 बताता है, ''*तब रिबका ने घूंघट लेकर अपने मुंह को ढांप लिया।*'' स्पष्टतया किसी अविवाहित महिला की ओर से शलीनता दिखाने के लिए यह स्थानीय परम्परा थी।

फिर भी उत्पत्ति 38:14 में हम पढ़ते हैं कि जब तामार ने यहूदा को फुसलाना चाहा तो उसने ''*अपना विधवापन का पहरावा* (जिसमें स्पष्टतया घूंघट नहीं था) *उतारा, घूंघट डालकर अपने को ढांप लिया।*'' उस समाज की संस्कृति में ऐसा लगता होगा कि घूंघट ओढ़ना वेश्या होने का अतीक है।

सारा और रिबका के जबर्दस्ती से मिस्त्र के राजा और फिलिस्तीन के राजा के जनानखाने में ले जाए जाने का कारण हम पढ़ते हैं, ''*क्योंकि वह अति सुन्दर है*'' (उत्पत्ति 12:14; 26:7)। स्पष्ट है कि उस संस्कृति में यह आवश्यक नहीं था कि उस समय और स्थान की स्त्रियां घूंघट पहनें, जिससे कोई उनकी सुन्दरता को देख न पाए।

पहली सदी के कुरिन्थुस नगर की मूर्तिपूजक काफिर संस्कृति में भी स्त्रियां जो कि रति देवी की पुजारिनें और धार्मिक वेश्याएं होती थीं, आम तौर पर अपने बाल कटवा लेती थीं या सिर मुंडवा लेती थीं, जिससे उनके पेशे का पता चलता था। एक मसीही स्त्री के लिए सिर मुण्डवाना इन निष्कर्षों के कारण ''लज्जा की बात'' था कि लोग उसके बारे में और उसके पति के साथ उसके सम्बन्ध में बारे में क्या अर्थ निकालेंगे।

कुरिन्थुस यूनानियों, रोमियों और यहूदियों सहित मिले-जुले लोगों की संस्कृति वाला शहर था। ऐसी स्थिति में बाल बनाने के साथ-साथ घूंघट ओढ़ना भी पहचान की बात होती थी।

उसी प्रकार आज समाज के उसी विद्रोही तत्व वाली कुछ स्त्रियों द्वारा बालों के बेतुके फैशन करना एक मसीही स्त्री के लिए जो ऐसे बाल बनाने की हिम्मत करती है, अपमानजनक बातें ही कहेगा। स्थापित प्रबन्ध के अधिकार के प्रति विद्रोह और उसे न मानने को दिखाने के लिए ''हिप्पियों'' के बाल बनाने का ढंग भी इस्तेमाल किया जाता था।

यह सच है कि पुराने और नये नियमों के बीच विभाजित करने वाली एक बड़ी रेखा है, और जो नियम एक वाचा के अधीन हैं उनका दूसरी वाचा के नियमों से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कारण पुराने नियम में पुरूषों के लिए लम्बे बाल और पगड़ी या टोपी पहनने की बात पढ़ने, और स्त्रियों के लिए घूंघट के होने या न होने से हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ये बातें नये नियम के मसीही लोगों के लिए निर्देशों पर कोई प्रभाव डालती हैं।

बेशक हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि (याजकों, कोढ़ियों और नाजीरों के लिए ओढ़नी के अपवाद के साथ) इनमें से अधिकतर बातें परम्परा और संस्कृति की श्रेणी में आती हुई लगती हैं। अधिकतर मामलों में बालों या टोपी के सम्बन्ध में परमेश्वर ने नियम नहीं दिया।

फिर भी प्रचलित परम्परा को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को ये निर्देश दिए:

> **1 कुरिन्थियों 11:1:** ''*हां पुरूष को अपना सिर ढांकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरूष की महिमा!*''

उस समय और संसार के उस भाग में पाए जाने वाले रीति रिवाजों में स्पष्टता अन्यजाति पुरूष कपड़े से या लम्बे बालों से सिर नही ढकते थे, विश्वासी यहूदी पुरूष चाहे ढकते होंगे; दूसरी ओर अधीन रहने वाली सम्मानित स्त्रियां बेशक ढकती थीं। कुरिन्थुस की कलीसिया में सम्भवतया समाज के अन्यजाति भाग से बने मसीही लोग अधिक थे, जिस कारण उनके समाज में पुरूषों के लिए सिर ढकने की प्रथा और स्त्रियों के लिए घूंघट ओढ़ने की प्रथा नहीं होगी।

> **1 कुरिन्थियों 11:8-10:** ''*क्योंकि पुरूष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरूष से हुई है। और पुरूष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरूष के लिए सिरजी गई*

है। इसी लिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।''

चर्चा आरम्भ के समय में जाकर सृष्टि के क्रम के सही होने के कारण पुरूष के स्त्री का सिर होने की ओर लौट जाती है। ये तथ्य स्पष्ट हैं, परन्तु प्रश्न उठता है:

इसका क्या अर्थ है कि ''स्वर्गदूतों के कारण''? इस प्रश्न पर बहुत अध्ययन और चर्चा हो चुकी है। पक्का कोई नहीं कह सकता कि इसका अर्थ क्या था, परन्तु एक सम्भावना चर्चा के मुख्य भाग से मेल खाती है कि नीचे फैंका गया यह स्वर्गदूत शैतान ही था जो हव्वा के पास आया और उसने उससे परमेश्वर की आज्ञा तुड़वाई। जिस कारण हव्वा की रक्षा और सुरक्षा के लिए परमेश्वर ने उसे अपने पति के अधिकार में कर दिया जिसे हर हाल में उसके और संसार के बीच खड़ा होना था।

शैतान और उसके दुष्ट आज भी संसार में हैं और मनुष्यजाति को अभी भी भरमा रहे हैं। जो स्त्री अपने सिर यानी अपने पति के अधिकार में रहती है उसके पास अपने और शैतान के बीच कवच है। वह चाहे अपनी सुरक्षा के सूचक के रूप में घूंघट रहने या कोई और प्रतीक, या उसका कवच केवल उसका आज्ञाकारी मन है, उसे अधिकार के अधीन रहना ''चाहिए।''

पुरूष और स्त्री के सम्बन्ध की और चर्चा दोनों के एक-दूसरे पर निर्भर होने को दिखाती है। आरम्भ में चाहे स्त्री को पुरूष में से बनाया गया था, परन्तु परमेश्वर द्वारा ठहराए प्रजनन के प्रबन्ध में, पुरूषों की आगमी सब पीढ़ियों को संसार में स्त्री के द्वारा ही लाया गया है। इस प्रकार निष्कर्ष यह है कि एक-दूसरे के ऊपर निर्भरता है, यानी पुरूष और स्त्री दोनों महत्वपूर्ण हैं, फिर भी अन्त में सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं।

1 कुरिन्थियों 11:11, 12: *''तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरूष, और न पुरूष बिना स्त्री के है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरूष से है, वैसे ही पुरूष स्त्री के द्वारा है; परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं।''*

1 कुरिन्थियों 11:13-15: *''तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहता है? क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरूष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिए अपमान है। परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखे; तो उसके लिए शोभा है क्योंकि बाल उस को ओढ़नी के लिए दिए गए हैं।''*

कुरिन्थियों को चुनौती दी गई कि इस मामले में वे खुद ही विचार करें। फिर उनसे पूछा गया, ''क्या स्त्री को उघाड़े सिर प्रार्थना करना शोभा देता है?'' फिर यह आभास देते हुए कि चर्चा घूंघट या पर्दे से हटकर दूसरी ओर जा रही है, उत्तर दिया जाता है कि स्त्री के लम्बे बाल उसकी शान हैं और उसे ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। कइयों का सुझाव है कि हम यहां चर्चा कर रहे हैं पुरूष के मुकाबले स्त्री के बाल लम्बे होना, ''ओढ़नी'' के लिए है।

बेशक ऐसा लगता है कि पिछली आयतों में अतिरिक्त ओढ़नी की बात है, जैसा कि सम्मानित स्त्रियों द्वारा परम्परागत रूप में पहनी जाती थी। परन्तु यह आयत सुझाव देती है कि स्त्री की ओढ़नी के लिए लम्बे बाल स्वीकार्य हैं, जो संसार में हर जगह और हर युग में सब स्त्रियों के पास होते हैं और यह स्वाभाविक ओढ़नी रीति-रिवाज या परम्परा से बदलती नहीं है।

बिना विवाद के, आम तौर पर होता है कि पुरूषों के बाल स्त्रियों के बालों से छोटे होते हैं, जैसा कि यह आयत सुझाव देती है। यह एक ऐसा तथ्य है जो अपने आप में आधार होना

चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि पुरूष के बाल नहीं हो सकते या स्त्री के बालों पर कभी कैंची नहीं लग सकती। ''लम्बे'' के लिए यह नहीं बताया गया कि कितने सेंटीमीटर या कितने इंच होने चाहिए। इसके बजाय क्योंकि यह शरीर का एक परिवर्तनीय भाग है इसलिए बालों की लम्बाई का इस्तेमाल पुरूष और स्त्री के बीच शारीरिक भेद बनाए रखने की सहायता में किया जाना चाहिए।

शायद बाइबल के दो अलग-अलग विषयों में ''जोड़ों'' के बीच समानता बनाकर इसे समझाया जा सकता है:

बालों की स्वाभाविक ओढ़नी और घूंघट में और मनुष्य की स्वर-तंत्रियों (vocal cords) के मुकाबले आराधना में गाने के साथ साजों के इस्तेमाल में।

चाहे जितने तर्क हों परन्तु व्यक्ति की स्वर-तंत्रियों उसे कही भी, किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में गाने में आराधना करने के योग्य बनाती हैं, जो कि साजों के अनिवार्य होने पर हर जगह, हर समय या हर परिस्थति में सम्भव नहीं होगा।

यह जानते हुए कि बालों की स्त्री वाली ओढ़नी उसे पुरूष से अलग करती है, स्त्री के लिए वही लाभ है, और घूंघट या पर्दा होने के बावजूद इस अर्थ में उसके अधीन होने का प्रतीक है।

विचार करने वाली बात: *''तुम आप ही विचार करो''...''सोहता है'' ... ''उचित है'' ... ''यदि'' ... ''रीति'' ... जैसे शब्दों से संकेत मिलता है कि नियम के बजाय इसे स्थानीय परम्परा को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने को कहा गया है। उनके लिए जो जिद करते हैं कि इन वचनों में सिर ढकने के लिए पल्लू का होना अनिवार्य बताया गया है, क्या इस समझ का समर्थन करने वाला कोई हवाला है? आयतों को इकट्ठा मिलाने पर एक स्पष्ट समझ बनाने के लिए परमेश्वर किसी विषय पर एक से अधिक जगह पर समझाता है।*

दो और बातें प्रासंगित हैं।

और कोई वचन तो नहीं है जो कलीसिया में स्त्रियों के सिर ढकने के इस्तेमाल की आज्ञा देता हो, परन्तु एक अजीब खामोशी है, यदि पौलुस संस्कृति के नियम के बजाय सामान्य नियम की बात कर रहा था तो स्थानीय संस्कृति के दैनिक जीवन को लेने के विचार (जब तक यह परमेश्वर के नियम से उलझाता न हो) मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन को खाने से सम्बन्धित (1 कुरिन्थियों 8:10); मसीह में स्वतन्त्रता (गलातियों 5:13-15) विवाह करने या अविवाहित रहने की छूट (1 कुरिन्थियों 7) यहूदी रीति-रिवाजों को मानने [या न मानने](प्रेरितों 16:3; गलातियों 2:3-5; प्रेरितों 21:18-26) की बात की गई है।

मसीही लोगों को जैसा कि मत्ती 23:5 में यीशु द्वारा अपने ताबीजों को चौड़ा करने के सम्बन्ध में चेतावनी दी गई थी और अध्याय 5 में मनुष्यों को दिखाने के लिए उपवास रखने और प्रार्थना करने के सम्बन्ध में चेतावनी दी गई थी।

1 कुरिन्थियों 11:13-15 का अर्थ यह है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि पुरूष स्त्रियों जैसे दिखाई देकर उसका अपमान करें; न ही वह किसी मसीही से अपने बाल कटवाकर या मुण्डन बनाकर, जो कि उस समय मन्दिर की वेश्या की पहचान थी या पुरूष जैसी दिखाई देकर, ''*उघाड़े*'' होने के द्वारा अपने पति का अपमान करे।

स्त्री-पुरूष के पहरावे का यह विशेष प्रश्न ''संस्कृति'' की बदलती हुई सनकों के कारण

नहीं है। यह पुरूष और स्त्री की भूमिकाओं के सम्बन्ध में अधिकार के परमेश्वर के नियमों पर आधारित है और ऐसा लगता है कि इसका आरम्भ आदम और हव्वा के समय से ही हुआ है। परन्तु बालों की प्राकृतिक ओढ़नी के अलावा पर्दे, घूंघट को पहनने या पल्लू होने का प्रश्न स्थानीय संस्कृति का मामला है, जो समय के साथ बदल सकता है।

आज यदि संस्कृति ऐसी है कि घूंघट ओढ़े बिना स्त्री को अनैतिक या अपने पति के लिए अपमान दिखाने वाली माना जाता है तो स्थानीय संस्कृति को चुनौती देने के बजाय उसका सम्मान करने में समझदारी है। या यदि अपने पति के प्रति पत्नी की अधीनता को दिखाने के लिए किसी संस्कृति में किसी और ''प्रतीक'' का इस्तेमाल किया जाता है तो उस प्रथा को मानने को प्राथमिकता दी जाए ताकि *''किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें''* (1 तीमुथियुस 5:14)।

दूसरी ओर यदि किसी संस्कृति में घूंघट या हैट प्रासंगिक नहीं है तो उसे पहनना बेकार होगा क्योंकि यह मसीही व्यक्ति का तमाशा ही बनाएगा। हमें अपने प्रति ऐसा अनुचित आकर्षण नहीं बनाना चाहिए (मत्ती 6:5, 16)।

1 कुरिन्थियों 11:16: *''परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे, तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।''*

क्या पौलुस यह कह रहा है कि ''संसार भर में हमारी, जो मसीह की कलीसियाओं के लोग हैं, ओढ़नी को उतारने की कोई प्रथा नहीं है''? या वह कह रहा है कि ''संसार भर में हमारी, जो कि मसीह की कलीसियाओं के लोग हैं, सिर ढकने की कोई प्रथा नहीं है''? क्या पौलुस यह कह रहा है कि इसमें झगड़ा करने वाली कोई बात नहीं हैं? या पूरे प्रश्न को ''प्रथा'' में बांट रहा है?

संक्षेप में, ऊपर दी गई सभी बातों पर फिर से विचार करते हैं:

1. पूरा हवाला परमेश्वर द्वारा ठहराए अधिकार के क्रम की बात कर रहा है। मसीह का सिर परमेश्वर है; पुरूष का सिर मसीह है; स्त्री का सिर पुरूष है। पुरूष को स्त्री के लिए नहीं सृजा गया था, बल्कि स्त्री को पुरूष के लिए सृजा गया था। पुरूष परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है। जबकि पुरूष की पसली से बना होने के कारण स्त्री पुरूष की महिमा है।
2. दूसरी बड़ी बात यह है कि पुरूष और स्त्री के पहरावे में स्पष्ट अन्तर होना आवश्यक है। प्रकृति भी सिखाती है कि यदि किसी पुरूष के लम्बे बाल हैं तो यह उसके लिए अपमान की बात है, परन्तु यदि स्त्री के बाल लम्बे हैं तो यह उसकी शान है।
3. स्त्री के बाल उसे ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। बालों की ओढ़नी परमेश्वर की ओर से दी गई है।
4. बालों की ओढ़नी परमेश्वर की ओर से दी गई है। घूंघट की अतिरिक्त ओढ़नी अलग-अलग परम्पराओं या प्रथाओं को मानने पर आधारित होगी, न कि वचन पर आधारित।
5. इस बात पर जोर देना कि हर संस्कृति में सब मसीही स्त्रियों द्वारा पूरा सिर ढकना अन्य वचनों के नियमों का उल्लंघन होगा, जहां मसीही लोगों को ऐसे व्यवहार करने की मनाही की गई जिससे लोगों का ध्यान उनकी ओर बिना कारण खिंचे।

धन्य होना बनाम श्रापित होना
(रोमियों 14:22, 23)
डेविड रोपर

धन्य होना

22 और 23 आयतों में पौलुस ने "बलवान" भाई को समझना जारी रखा। उसने उस भाई से इस तथ्य को प्रचारित न करने के लिए कहा कि वह मानता है कि मांस खाना परमेश्वर को स्वीकार्य है: "तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख" (आयत 22क)। "विश्वास " यहां "बलवान" भाई के व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है। आयत 22 के पहले भाग को इस प्रकार व्यक्त किया गया है: "इन बातों के विषय में तेरा जो भी विश्वास है, उसे तेरे और परमेश्वर के बीच रखा जाना चाहिए।" क्या पौलुस यह सुझाव दे रहा था कि मसीही लोग धूर्त और धोखेबाज होने चाहिए? बिल्कुल नहीं। वह तो केवल उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि यदि उनके विचार व्यक्त करने से किसी साथी मसीही को हानि होती है तो अच्छा यही है कि वे अपने विचार अपने तक ही रखे।

फिर पौलुस ने आगे कहा, "धन्य है वह, जो उस बात में जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता" (आयत 22ख)। "जिसे वह ठीक समझता है" का अर्थ मांस खाने के सम्बन्ध में है। यदि "बलवान" भाई किसी "निर्बल" भाई को मांस खाने या उस विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के द्वारा दुखी करता है, तो उसके कार्य उसे दोषी ठहराएंगे। परन्तु यदि वह अपना विचार अपने तक रखे, तो वह "धन्य" होगा। "धन्य" का अनुवाद makarios से किया गया है, जिसका इस्तेमाल मत्ती 5:3-11 और अन्य आयतों में भी मिलता है। लियोन मौरिस ने लिखा है कि " 'happy' में धार्मिक संतुष्टि की कमी मिलती है यानी यह केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि परमेश्वर की आशीष की बात है।" परमेश्वर अपनी आशिषें उन लोगों पर बरसाता है, जो खुद के बजाय मसीह में अपने भाइयों और बहनों की अधिक चिन्ता करते हैं।

दोषी होना

यह हमें उस आयत पर ले आता है, जिसका उल्लेख रोमियों 14 की हमारी चर्चा में पहले कई बार हुआ है: "परन्तु जो संदेह करे [कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है] संदेह करके खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका; क्योंकि वह निश्चय धारणा से [मांस] नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है" (आयत 23)। अध्याय 14 में एक और जगह की तरह "विश्वास" यहां व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है। मेकोर्ड ने आयत 23 का अनुवाद इस प्रकार किया: "संदेह करने वाला यदि खाता है, तो वह दोषी है क्योंकि *उसमें* विश्वास की कमी है; और कोई भी बात जो *विश्वास* से नहीं है पाप है।" इस बात पर कि अपने विवेक की बात मानना कितना आवश्यक है। बाइबल का यह मुख्य वाक्य है। फिलिप्स ने इसका इस प्रकार अनुवाद किया है, "यदि कोई व्यक्ति मांस के विषय में परेशान विवेक के साथ खाता है, तो पक्का जान लें कि वह गलत कर रहा है। ... जब हम अपने विश्वास से हटकर काम

करते हैं तो हम पाप कर रहे होते हैं।''

आयत 23 में पौलुस ने कठोर भाषा का इस्तेमाल किया: ''जो संदेह करके खाता है, वह *दण्ड के योग्य* ठहर चुका; क्योंकि ... जो कुछ विश्वास से नहीं, वह *पाप* है।'' कुछ लोग यह कहकर कि उसे उसका विश्वास दोषी ठहराता है, न कि परमेश्वर, इस भाषा को नरम करने की कोशिश करते हैं; परन्तु आयत का आरम्भ ''परन्तु'' (de) के साथ होता है, जो इसे पिछली आयत के साथ जोड़ता है। पौलुस आयत 22 में परमेश्वर से आशीषित होने और आयत 23 में परमेश्वर द्वारा दण्डित होने में अन्तर कर रहा था।

शायद मुझे फिर से जोर देना चाहिए कि पौलुस यह प्रस्ताव नहीं दे रहा था कि धार्मिक मामलों में ''अपने विवेक की मानो।'' हमारा धार्मिक अधिकार हमारा विवेक नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन है। विवेक केवल इस हद तक सुरक्षित अगुआ है कि इसे परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा अगुआई मिलती है। वर्षों से बहुत से लोगों ने स्पष्ट विवेक के साथ परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी है (देखें प्रेरितों 8:3; 23:1)। तौ भी यहां तक विवेक हमारा ''अगुआ'' है। यानी हमें अपने विवेक की बात नहीं टालनी चाहिए। मेरे भाई कोय ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''विवेक ... गलत बात को सही नहीं कर सकता है, परन्तु यह सही बात को गलत कर सकता है।''

इस सच्चाई को इससे अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता कि अपने विवेक के विपरीत काम न करें। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने यह विचार जोड़ा: '' अपने विवेक के विरूद्ध न जाने के इस स्पष्ट निर्देश के अनुसार इसे सिखाने की स्पष्ट आवश्यकता भी है।'' फिर से सिखाए जाने के समय, हमें वह हर काम नहीं करना चाहिए, जिसे विवेक कहता है कि गलत है। एक पुरानी कहावत है, ''यदि संदेह हो जाए, तो न करो।'' यह कहावत विशेष रूप से विवेक पर लागू होती है। यदि आपको *संदेह* है कि कोई बात करनी सही है या नहीं, तो उसे *न* करें।

आयत 23 को छोड़ने से पहले एक याद दिलाने वाली बात है कि चाहे इन आयतों में हम में से हर किसी के लिए संदेश है, परन्तु पौलुस ने विशेष रूप से ''बलवान'' भाइयों के नाम लिखा है। वह ''बलवान'' लोगों से ऐसा कुछ न करने के लिए कह रहा था, जिससे अपने विवेक की बात न मानकर और बदले में दोषी ठहरकर ''निर्बल'' भाई को पाप करने की प्रेरणा मिले। यह सही होने से कहीं अधिक आवश्यक था।

सारांश: सही होना *विश्वास* के मामलों में व्यापक महत्व रखता है। जिम्मी एलन ने लिखा है, ''ऐसे मामले हैं, जिनमें हम खामोश रहकर समझौता नहीं कर सकते। यीशु और प्रेरितों के [जीवन] तर्क से भरे हुए थे। हमें विश्वास के लिए सच्चे मन से प्रयत्न करना आवश्यक है'' (यहूदा 3)। झूठी शिक्षा देने वालों के विषय में पौलुस ने कहा, ''उन के अधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना ...'' (गलातियों 2:5क)।

परन्तु *विचार* के मामलों में कुछ बातें सही होने से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह ध्यान रखना कि किसी भाई को दुख न लगे सही होने से अधिक आवश्यक है। किसी भाई की सहायता करने की कोशिश करते रहना सही होने से कहीं आवश्यक है। अपने से बढ़कर अपने भाइयों के प्रति अधिक चिन्तित होने में परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

बच्चों से भरा हुआ रथ

रॉन स्टाऊ

करीब 80 साल पुरानी बात है। पश्चिमी टैक्सस के एक छोटे से मोहल्ले में आठ बच्चों वाला एक बड़ा परिवार रहता था। वह परिवार कहीं पर भी कलीसिया की आराधना में नहीं जाता था। परन्तु सड़क के पास एक आदमी रहता था जो आराधना में जाना मिस नहीं करता था। वास्तव में वह प्रभु के हर दिन अपने रथ में बच्चों को साथ ले जाता था। सब बच्चे बड़े होते गए और उन्होंने मसीह में बपतिस्मा ले लिया। अंत में उनके माता-पिता ने भी बपतिस्मा ले लिया।

आज वे माता-पिता और उनके आठों बच्चे दुनियां में नहीं हैं, परन्तु उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे हैं आज भी हैं जो प्रभु की सेवा कर रहे हैं। मेरे ध्यान में उनसे से एक विशेष तौर पर आ रहा है। उसके पांच बच्चे, उनके बच्चों के आगे तेरह बच्चे और फिर उनके बच्चों के पन्द्रह बच्चे हैं जिनमें से सभी राज्य में काम कर रहे हैं। मैं अपनी पत्नी की दादी की बात कर रहा हूं और मुझे उनके जनाजे पर बोलने का सुअवसर मिला था।

उनके जनाजे के लिए उस मसीही परिवार के इकट्ठा होने पर हम बात कर रहे थे कि यदि वह अच्छा पड़ोसी सालों तक इन बच्चों को आराधना में ले जाने के लिए न आता, तो क्या होता। क्या वह कभी सुसमाचार को सुन पातीं? क्या या उसका परिवार आज मसीह में एक होता? उस आदमी के कारण आने वाली कई पीढ़ियों पर कितना असर हुआ!

हो सकता है कि हमें कि अपने किए कामों के असर का, जो आने वाली पीढ़ियों पर पड़ सकता है, अभी पता न चले। परन्तु हमें यह पता चल सकता है कि यदि हम बीज बोते हैं तो परमेश्वर का वादा है कि वह बढ़ेगा। आइए हम हर अवसर का लाभ उठाएं।

‘‘आपने सुना होगा’’

जॉन स्टेसी

आपने यह भी कहते सुना होगा कि मसीह की कलीसिया भी एक सम्प्रदाय है। इस विषय में हमने पहले भी देखा है, कि मसीह की कलीसिया असामप्रदायिक है। न तो उसका कोई साम्प्रदायीक नाम है और न ही वह किसी सामप्रदायिक धर्मसार को मानती है। मसीह की कलीसिया की आराधना भी बिल्कुल बाइबल के नए नियमानुसार है। हम प्रभु के दिन उपासना के लिये एकत्रित होते हैं। जैसा कि प्रेरितों 20:7 में हम पढ़ते हैं, ‘‘सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने (प्रभु भोज में भाग लेने) के लिए इकट्ठे हुए . . .’’ 1 कुरिन्थियों 16:1-2 तथा प्रकाशितवाक्य 1:10 को भी देखें। ऐसे ही हम प्रार्थना करते

हैं, जैसे कि प्रेरितों 2:42; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 तथा 1 कुरिन्थियों 14:15 में पढ़ते हैं। हम गीत और भजन गाते हैं पर साथ में बाजे नहीं बजाते। क्यों? क्योंकि नए नियम में इसकी न तो कोई आज्ञा है और न ही कोई ऐसा उदाहरण है। देखिये: 1 कुरिन्थियों 14:15; इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:17; इब्रानियों 2:12 तथा 13:15। हम प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेते हैं। क्यों? जैसा कि ऊपर प्रेरितों 20:7 से हमने देखा है कि आरम्भ में मसीही लोग इसी उद्देश्य से एकत्रित होते थे। 1 कुरिन्थियों 11:20 में लिखा है, ‘‘सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु-भोज खाने के लिये नहीं।’’ यद्यपि यहां पौलुस उन्हें डांट लगाकर कह रहा था कि वे प्रभु-भोज को अनुचित रीति से ले रहे थे, पर इससे यह बात प्रत्यक्ष होती है कि जब वे इकट्ठे होते थे तो वे प्रभु-भोज लेते थे। इसी प्रकार सप्ताह के पहले दिन जब हम उपासना के लिये एकत्रित होते हैं तो हम अपना-अपना चंदा भी देते हैं जैसा कि 1 कुरिन्थियों 16:1-2 में लिखा है। ऐसे ही हम एकत्रित होकर बाइबल की बातों को सुनते हैं, जैसे कि प्रेरितों 2:42 तथा 2 तीमुथियुस 4:2 से विदित है।

मसीह की कलीसियाओं का संगठन भी असाम्प्रदायिक है। मसीह की कलीसियाओं का कोई विश्व-संगठन या हेड-क्वार्टर नहीं है। कलीसिया में न कोई पोप है और न ही कार्डिनल या आर्चबिशप या कौंसिल है। मसीह की कलीसिया में क्लेरजी, सायनाड, फादर और ‘‘विशप साहब’’ जैसी चीजें नहीं हैं। मसीह की सारी कलीसियाएं स्वाधीन हैं-वे सब बाइबल की शिक्षानुसार चलती हैं। प्रत्येक कलीसिया में उसके अपने बुर्जुग और सेवक होते हैं (प्रेरितों 20:17; 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5; 1 तीमुथियुस 3:8-13)। बुजुर्गों को ही बाइबल में रखवाले, चरवाहे और प्राचीन भी कहा गया है। इन बातों के बारे में अपनी बाइबल में से पढ़कर अवश्य देखें, क्योंकि इनका सम्बन्ध हमारी आत्माओं से है।

विधवाओं के लिए परमेश्वर की देखभाल

सिलविया एल. कैम्प

विधवाएं संसार में हर जगह मिल जाती हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि बहुत सी स्त्रियों का जीवन पुरूषों से अधिक होता है। पर्याप्त प्रबन्ध होने के कारण कुछ लोगों का जीवन सुविधाजनक होता है जबकि दूसरों का नहीं।

परन्तु विधवाओं को परमेश्वर ने कभी भी तुच्छ नहीं जाना। निर्गमन 22:22-24 में उसने आज्ञा दी कि उन्हें दुख न दिया जाए। यदि उन्हें दुख दिया जाता है तो उसने उनकी पुकार को सुनना था। उसका क्रोध भटकाना था और उसने दुख देने वालों को तलवार से मार डालना था। फिर उनकी पत्नियों ने विधवांए बन जाना था और फिर उन्होंने दुख सहने थे।

नये नियम में याकूब ने लिखा कि शुद्ध और निर्मल भक्ति विधवाओं के कलेश में

उनकी सुधि लेना है (याकूब 1:27)। प्रेरितों 6:1 में एक उदाहरण मिलता है। यह पता चलने पर कि उसका ध्यान नहीं रखा जा रहा, इसलिए कई भले पुरूषों को उनका ध्यान रखने को चुना गया।

नये नियम की शिक्षा यह है कि विधवा की देखभाल उसके घर के लोग करें ताकि कलीसिया उनकी देखभाल कर सके जिनका कोई नहीं (1 तीमुथियुस 5:16)। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा कि यदि कोई ऐसा नहीं करता है तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है (आयत 8)।

रूत और नाओमी की सुन्दर कहानी से सुसराल द्वारा विधवाओं की देखभाल का उदाहरण मिलता है। रूत का विवाह नाओमी के पुत्र से हुआ था, परन्तु वह मर गया। दोनों स्त्रियां एक दूसरी से प्रेम करती रहीं और एक दूसरे की आवश्यकओं को पूरा करती रहीं। रूत खेतों में अनाज बटोरती थी ताकि उन्हें खाना मिल सके (रूत 2:2)। व्यवस्था को पूरा करते हुए नाओमी ने रूत निकट सम्बन्धी के साथ रूत के विवाह का प्रबन्ध करने में सहायता की।

प्रेरितों 9:39 में दोरकास नामक स्त्री के भले कामों का विवरण है जो विधवाओं को कपड़े देकर उनकी सहायता किया करती थी। जब वे मर गई तो वह रो रही थी और पतरस को वे कुरते और कपड़े दिखा रही थीं जो दोरकास ने उनके लिए बनाए थे।

परमेश्वर चाहता है कि विधवाओं की सुधि ली जाए। हमने आदमियों, ससुराल और स्त्रियों के बड़े उदाहरण देखे हैं जिनमें दिखाया गया है कि परमेश्वर शोक में डूबी इन स्त्रियों के लिए क्या करना चाहता था।

यदि आप विधवा हैं तो यह मत भूलो कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और उसने आपकी देखभाल की आज्ञा दी है। आप अकेली नहीं हो।

बपतिस्में (जल में गाड़े जाने) के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि केवल एक ही बपतिस्मा है। *"एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा"* (इफिसियों 4:5)।

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा, गाड़ा जाना है। *"और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे"* (कुलुस्सियों 2:12)।

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा, जल में गाड़ा जाना है। *"मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे। तब खोजे ने कहा, 'देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, 'यदि तू सारे मन से विश्वास करता हूं तो हो सकता है। उसने उत्तर दिया, 'मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और*

फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजे को बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया'' (प्रेरितों 8:36-39)।

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में होता है। *''इसलिये तुम, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ: और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं' ''* (मत्ती 28:19, 20)।

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा मसीह में हमें मिलता है। *''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें''* (रोमियों 6:3, 4)।

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा हमें कलीसिया में मिलाता है। *''क्योंकि हम सबने, क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया''* (1 कुरिन्थियों 12:13)।

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा हमें बचाता है। *''और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर क मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)''* (1 पतरस 3:21)।

अच्छे मन वाले लोग (1 थिस्स. 2:13-20)

अर्ल डी. एडवर्डस्

यहूदियों के मध्य एक महान गुरू की कहानी है जिन्होंने उनसे जो उनको विद्वान मानते थे, यह पूछा कि उन्हें यह बताएं कि परमेश्वर के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के तरीके क्या हैं। एक व्यक्ति ने आगे आकर कहा कि आपके देखने का नजरिया बाइबल पर आधारित हों, जिसमें संतुष्ट होना अति आवश्यक है। दूसरे ने कहा कि आप एक अच्छे संगी साथी हों। तीसरे ने कहा कि आप एक अच्छे पड़ोसी हों। अंत में, इलियाजर नामक व्यक्ति ने कहा, अच्छे मन होना सर्वोत्तम है। रब्बी ने कहा,''श्रीमान, आपने ठीक उत्तर दिया, क्योंकि जब आपका मन अच्छा होगा, आपकी दृष्टि भी ठीक होगी और तब आप अच्छे पड़ोसी तथा अच्छे संगी साथी होंगे।''

पौलुस के अनुसार जो उसने 1 थिस्सलुनीकियों 2:13-20 में कहा, हम देख सकते हैं कि थिस्सलुनीकियों के विश्वासियों का ''मन अच्छा'' था। इन आयतों में पौलुस ने यह वर्णन

किया है कि जब वह उनके साथ था तो थिस्सलुनीके के विश्वासियों ने उसके संदेश को कैसे ग्रहण किया। उनका प्रत्युत्तर यह दर्शाता है कि उनके ''मन अच्छे'' थे।

धन्यवादित शिक्षक (2:13-20)

पौलुस का थिस्सलुनीकियों के साथ एक विशेष सम्बन्ध था। 2:13-20 में, उसने थिस्सलुनीकियों को मसीह में भाई एवं बहन मानने की अपने आनंद की अनुभूति प्रकट की है। जब पौलुस, सीलास और तीमुथियुस को फिलिप्पी से निकाल दिया गया था और उसके पश्चात जब वे थिस्सलुनीके आए थे तो यह संबंध यूँ ही स्थापित नहीं हुआ था। यह तात्कालिक संबंध भी नहीं था कि जब वे एक साथ थे तो संबंध स्थापित हुआ और जब वे अलग हुए तो यह संबंध समाप्त हो गया। यह तो जीवन पर्याप्त से भी बढ़कर था; यह तो अनादि मित्रता थी जो इन शिक्षकों के मन में सदैव बसी हुई थी।

जब हम दूसरों को शिक्षा देते हैं, अपने संगी मसीहियों को परामर्श देते हैं, भाइयों एवं बहनों को परमेश्वर की इच्छा पूरा करने के लिए उत्साहित करते हैं तो हम उनके साथ अनादि संबंध स्थापित करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि दूसरों को शिक्षा देने, परामर्श करने और उत्साहित करने जैसे महत्वपूर्ण अंगों के द्वारा कलीसिया कार्य करें।

परमेश्वर के वचन को कार्य करने दो (2:13)। तब शिक्षक परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं तो क्या होता हैं जब छात्र अपने शिक्षकों का अनुकरण करते हैं जो परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं? अद्‌भुत बातें होती हैं! यदि लोग यह जाने कि सुसमाचार प्रचार परमेश्वर की ओर से उनके लिए संदेश है और वचन के द्वारा अपने आपको परमेश्वर को सौंपें तो तब वह (परमेश्वर) उनके मनों में कार्य करने लगता है। जीवन अनादिकाल के लिए बदल जाता है!

1:2, 3 के धन्यवादी विचारों को 2:13 में पुन: परिचित कराया गया है। पौलुस ने स्वयं और अन्य शिक्षकों का परमेश्वर के प्रति लगातार कृतज्ञता के विशेष कारणों का उल्लेख किया है। थिस्सलुनीके के वासी जो मसीही बन गए थे उनको सबसे अधिक इस बात ने प्रभावित किया था कि उनके लिए परमेश्वर के पास संदेश था। इसका यह तात्पर्य हुआ कि परमेश्वर सचमुच उनकी चिंता करता था और इसको उसने यीशु के उद्धार के कार्य के द्वारा प्रोत्साहित भी किया। वे इस बात से आश्वस्त हो गए थे कि परमेश्वर उनकी सहायता करना चाहता है और उनके भविष्य की तैयारी कर रहा है। परिणामस्वरूप, जो परमेश्वर चाहता था उसको करना उनकी प्राथमिकता हो गई थी। उन्होंने सुसमाचार को अपने लिए परमेश्वर की ओर संदेश के रूप में लिया!

हमें परमेश्वर के वचन को सीखाने के द्वारा हमारे अंदर कार्य करने देना चाहिए, हमें इसके प्रति उत्साहित होना चाहिए ताकि दूसरे भी यह देखकर इसे अपने अंदर कार्य करने दें। जैसे ही परमेश्वर का वचन कार्य करेगा, यह प्रत्येक मसीही तथा पूरे कलीसिया को बदलेगा।

विश्वासयोग्य लोगों का अनुकरण करें (2:14, 15)। यह अलग बात है जब हम उत्तेजित होकर सुसमाचार के संदेश को यह मानकर स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर के पास हमारे लिए योजना है जबकि विपरीत परिस्थिति में उसी परमेश्वर के संदेश में विश्वासयोग्य रहना कठिन बात है। नए मसीही या मसीह को स्वीकार करने वाले लोगों को निम्न प्रश्न का

उत्तर दें तो अच्छा होगा, ''यदि मेरे परिवार वाले मेरे इस निर्णय का विरोध करते हैं तो ऐसी परिस्थिति में मैं क्या करूँगा/गी?,'' ''मेरे इस निर्णय के बारे में जब मेरे सहकर्मी मेरा उपहास करेंगे तो ऐसे परिस्थिति में मैं क्या करूँगा/गी?''; ''क्या मैं एक ऐसे जीवन प्रारंभ करने जा रहा/ही हूँ जिसे शैतान नष्ट करने का प्रयास करेगा?''

थिस्सलुनीके के मसीहियों ने सताब के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त की? उन्होंने उसे सहा; वे विश्वासयोग्य बने रहे (2:14, 15)। कुछ देशों में सार्वजनिक आराधना मना है। संभवत: हम ऐसी कल्पना कर सकते हैं कि ऐसे बंधन में मसीही जीवन जीना कठिन होगा। फिर भी, हमें स्मरण रखना होगा कि हम परमेश्वर की सेवा किसी भी परिस्थिति में कर सकते हैं और उसको प्रसन्न कर सकते हैं -यहाँ तक कि सताव में भी।

हमें यह स्मरण करते हुए कि कुछ लोगों को उनके विश्वास के कारण सताया जा रहा है, परमेश्वर को हमारे स्वतंत्रता के लिए धन्यवाद देना चाहिए और परमेश्वर चाहता है कि हम किसी भी परिस्थिति में उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। कठिनाइयों के कारण परमेश्वर की सेवा को छोड़ने के विचार का हमें सामना करना चाहिए। मित्रों, रिश्तेदारों या भाई-बन्धुओं के विरोध भी हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने से न रोके। चाहे क्यों न कोई हमारे विश्वास के कारण हमें अनदेखा करे, हमारा उपहास उड़ाए या दुरूपयोग करे फिर भी आओ हम विश्वासयोग्य लोगों के आयत चिह्नों का अनुकरण करते हुए परमेश्वर की सेवा करें।

अपेक्षित विरोध (2:15, 16)। जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को सताते हैं, वे परमेश्वर के विरोधी हैं और वे लोगों के कल्याण का भी विरोधी हैं। संतों को बाधा पहुँचाने के द्वारा वे यह बताना चाहते हैं कि शैतान का मार्ग उचित है और परमेश्वर का मार्ग अत्यंत कठिन है। इसलिए, जो संदेश वे मसीहियों और गैर मसीहियों को देते हैं वह यह है कि परमेश्वर के बातों को न मानकर वे शैतान का कार्य करें।

हम विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं। जैसे हम परमेश्वर का कार्य करते हैं और वह प्रसन्न होता है तो वैसे ही शैतान हमसे अप्रसन्न होता है। वह हमारे प्रत्येक अच्छे विचारों, अच्छे शब्दों का उच्चारण और प्रत्येक अच्छा कार्य जो हम करते हैं, का विरोध करता है। वह किसी को भी हमारे इन अच्छे कार्यों का विरोध करने के लिए प्रयोग कर सकता है। तो इससे आप चकित न हों जब शैतान आपका विरोध करता है। आप इसकी अपेक्षा कर सकते हैं!

कुछ परिदृश्य से पाप आकर्षक लगता है लेकिन इसका अंत मृत्यु है क्योंकि,''पाप की मजूदी मृत्यु है'' (रोमियों 6:23)। कभी-कभी हम पाप का घातक परिणाम भूल जाते हैं। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि वे पाप से बच जाएंगे और इसका उन पर कोई बुरा परिणाम नहीं होगा। हमारा पाप मृत्यु का कारण बना-परमेश्वर के पुत्र का मृत्यु। यह अत्यंत गम्भीर विषय है। परमेश्वर का मार्ग इस जीवन में लाभ पहुँचाता है और परमेश्वर के साथ अनंत जीवन का प्रतिफल भी मिलता है। यदि हम मसीही जीवन जीते हैं तो विरोध की अपेक्षा कर सकते हैं लेकिन इसके साथ हम परमेश्वर और उसके लोगों के साथ अनंत सुख का भी अपेक्षा कर सकते हैं।

भाइयों से प्रेम (2:17, 18)। यद्यपि कुछ लोगों ने थिस्सलुनीके मसीहियों के निकट रहना घृणित समझा जबकि अन्य उनके साथ संगति करके आनंदित हुए। कुछ लोगों ने उनके

कार्यों का विरोध किया जबकि अन्य लोगों ने उनकी प्रशंसा की। पौलुस, सीलास और तीमुथियुस इन भाइयों से अलग होने के बाद भी वे उनसे फिर मिलना चाहते थे और वे चाहते थे कि वे इस बात को जाने।

हमारे वार्तालाप और उत्साहित करने वाली पत्री में अन्य स्थानों में रहने वाले भाइयों के लिए एक और बहुमूल्य संदेश का विलय होना आवश्यक है: हम उन्हें स्मरण करते हैं और हम उनके साथ रहना चाहते हैं। प्रेम, भक्ति और भाईचारा मसीही संगति का अभिन्न अंग है। इस प्रेम का प्रगटीकरण और अभिव्यक्ति इन दृष्टिकोण और भावनाओं का स्वभाविक विस्तार है। हमें अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करना है और उन्हें इसके बारे में जानना आवश्यक है!

जिस प्रकार हम चाहते हैं कि हम अपना प्रेम प्रकट करें, तो विरोध हमें ऐसा करने से रोकती है। जो हम कर सकते हैं, उसको करने से कठिनाई हमें न रोके। मसीहियों के लिए जहाँ जीवन है वहाँ प्रेम है!

पुनर्मिलन की अपेक्षा करें (2:19, 20)। मसीहियों के लिए, कोई भी बाधा तात्कालिक है, क्योंकि अंततः सभी समस्याओं पर एक दिन विजय प्राप्त कर ली जाएगी। यीशु सबका स्वामी है और वह सभी शत्रुओं का नाश कर देगा–चाहे वह मृत्यु ही क्यों न हो (1 कुरिन्थियों 15:23-26)। अन्य विश्वासयोग्य परमेश्वर के बच्चों से अलगाव तात्कालिक हो सकता है क्योंकि संगी मसीहियों और यीशु के साथ पुनर्मिलन बहु प्रतिशित है।

अध्याय 2 के अंतिम आयत यीशु के पुनरागमन पर केन्द्रित है। यह उन मसीहियों को जो सुस्त हो गए थे या फिर मसीह से दूर हो रहे थे के लिए चेतावनी की छड़ी घुमाना नहीं थी। यीशु मसीह का पुनरागमन का उल्लेख इन मसीहियों को उत्साहित करना था जो उनके शिक्षकों द्वारा उनके प्रति भावनाओं का तीव्र अभिव्यक्ति है। यीशु का पुनरागमन उनके लिए उसके साथ पुनर्मिलन का अवसर है।

ये शिक्षक क्या शिक्षा दे रहे थे? "यीशु दोबारा आ रहा है। हम इसके प्रति उत्साहित हैं! क्यों? क्योंकि हम तुम्हें देखेंगे और हमेशा तुम्हारे संग रहेंगे! हम चाहते हैं कि तुम यह जानो कि हम तुम्हारे प्रति कैसी भावना रखते हैं, इसलिए हम इसके बारे में तुम्हें लिख रहे हैं!"

जब हम अपने संगी मसीहियों की सहायता कर रहे हैं तो हमारे लिए यह कितना बड़ा उदाहरण है। यदि हम अपने विद्यार्थियों को यह बताते हैं तो उनके लिए यह कितना उत्साह का कारण होगा, "मैं स्वर्ग में तुम्हारे साथ रहने की बाट जोह रहा/ही हूँ। जब एक भाई या बहिन हमें यह बताता/ती है तो यह हमारे लिए कितना उत्साह का कारण होगा, "मैं चाहता/ती हूँ कि यीशु शीघ्र लौटे ताकि मैं सदाकाल तक आपके साथ रहूँ।

उपसंहार। यदि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ संबंधों के प्रति सजग हैं तो वह कलीसिया कितनी मजबूत होगी। यह जानकर शिक्षक उत्साहित होंगे कि उनके शिष्य उनके आयतचिह्नों पर चलना चाहते हैं। संगी मसीही दूसरे मसीहियों के विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनके विश्वासयोग्यता के उदाहरण देखकर उत्साहित होंगे।

ये आयतें हमें मसीहियों के मध्य संबंधों का विकास और उसको बनाए रखने की परिज्ञान प्रदान करता है। जब हम परमेश्वर के परिवार को अपना परिवार मानते हैं तो इस मिलन का आनंद की अनुभूति हमारा अनुभव हो सकता है।